आकाश दर्शन का आनंद

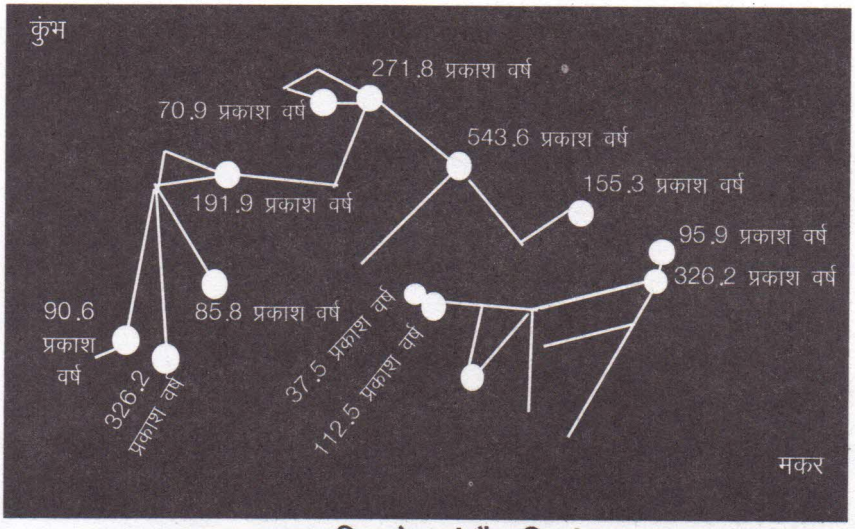

काल्पनिक रेखाएं हैं राशियां

पिछले कई माह से स्रोत के अंतिम पृष्ठ पर आकाश का मानचित्र दिया जा रहा है। आपने शायद इसका उपयोग भी किया होगा और आकाश में राशियां, ग्रह, तारामंडलों को खोजने का प्रयास भी किया होगा। इस अंक में दिया गया मानचित्र 15 सितंबर रात 10 बजे के लिए है।

पृथ्वी की परिक्रमा गति की वजह से रोज़ाना आकाश थोड़ा बदला हुआ नज़र आता है। आकाश की जो स्थिति 15 सितंबर की रात 10 बजे है, ठीक वही स्थिति 16 सितंबर की रात 9 बजकर 56 मिनट पर आएगी और 14 सितंबर रात 10 बजकर 4 बजे भी होगी। ऐसे करते-करते 15 दिन में 1 घण्टे का अंतर पड़ जाता है। यानी इसी नक्शे का उपयोग आप 15 सितंबर रात 10 बजे के लिए और 1 सितंबर रात 9 बजे या 30 सितंबर रात 11 बजे के लिए भी कर सकते हैं। हां एक बात का ध्यान रखना होगा : 15 सितंबर रात 10 बजे आकाश में चांद उफक पर होगा इसलिए तारे थोड़े धुंधले पड़ जाएंगे। चांद की स्थिति में रोज़ लगभग 50 मिनट का अंतर पड़ता है।

इस माह का एक विशेष आकर्षण है मंगल ग्रह जो मकर व कुंभ राशि में नज़र आएगा। कई हज़ार बरसों में मंगल पृथ्वी के इतना निकट आया है। चूकिएगा नहीं।

इस माह आकाश में वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन राशियां दिखाई देंगी। यदि वृश्चिक देखना चाहें तो रात 9 बजे कोशिश करें क्योंकि 10 बजे तक तो वह लगभग डूबने को होगी।

राशियां खोजने के लिए दक्षिणी आकाश को देखना पड़ता है। इस माह मकर और कुंभ राशियां खोजने का आनंद लीजिए। ये राशियां उतनी स्पष्ट नहीं हैं जितनी वृश्चिक या धनु। इनके अधिकांश तारे काफी धुंधले हैं।

मकर और कुंभ को एक साथ ही खोजना होगा क्योंकि ये एक-दूसरे पर फैली हुई हैं। मकर एक बकरी जैसी दिखती है, यूनानी परंपरा में इसे एक समुद्रा बकरी माना गया है। किंतु भारतीय ज्योतिष परंपरा में इस एक समुद्री जीव (मगर) माना गया है।

कुंभ का नाम भी रोचक है। इसे कुंभधर या जलकुंभ के रूप में पहचाना जाता है। यह एक इंसान की शक्ल है जो एक घड़े से पानी गिरा रहा है।

किंतु राशियों के बारे में एक बात कहना ज़रूरी है। किसी भी राशि में शामिल किए गए तारे एक दूसरे के पास-पास हों यह ज़रूरी नहीं है। यह तो हमारी कल्पना है कि हम उन्हें एक आकृति प्रदान करते हैं। चित्र में सूर्य से इन राशियों के तारों की दूरियां देखकर आप खुद ही इंसान की कल्पना शक्ति का अंदाज़ लगा सकते हैं। दूरियां प्रकाश वर्ष में दी गई हैं। एक प्रकाश वर्ष का अर्थ है कि वह दूरी तय करने में प्रकाश को एक वर्ष का समय लगता है। यानी मकर राशि के तारों का जो प्रकाश आज आप देख रहे हैं वह वहां से 37 से लेकर 326 वर्ष पूर्व चला होगा!